श्रीनिवास बालभारती

भीमसेन

हिन्दी अनुवाद

डॉ. जी. पद्मजा देवी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 177

भीमसेन

तेलुगु मूल

बी. वी. नरसिंहाराव

हिन्दी अनुवाद

डॉ. जी. पद्मजा देवी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

2015

Srinivasa Bala Bharati - 177
(Children Series)

BHEEMSEN

Telugu Version
B. V. Narasimha Rao

Hindi Translation
Dr. G. Padmaja Devi

T.T.D. Religious Publications Series No. 1125
©All Rights Reserved

First Edition - 2015

Copies : 5000

Price :

Published by
Dr. D. SAMBASIVA RAO, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

D.T.P:
Office of the Editor-in-Chief
T.T.D, Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati.

दो शब्द

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता है। उत्तम कपूर से बढ़कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिरकाल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक है।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य अभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.बी.रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्देश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फलस्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्

स्वागत

श्रीनिवासदयोद्भूता बालानां स्फूर्तिदायिनी।
भारती जयताल्लोके भारतीयगुणोज्ज्वला।।

जब खण्डान्तरों में सभ्यता की बू तक नहीं थी तब भरतवर्ष अपनी सभ्यता, संस्कार,धर्म, नैतिकाचरण के लिए प्रसिद्ध हो गया था। जो इस पुण्य-भूमि पर जन्मता है वह धर्माचरण में स्थिर होकर अधर्म का सामना करता है और क्रमशः ईश्वराभिमुखी होकर यशोवान होता है। ऐसे महात्माओं के प्रभाव से हमारे जीवन इह-पर दोनों प्रकार लाभान्वित होते हैं। उनके आदर्शमय जीवनों से स्फूर्ति पाता है और समझता है कि मैं इस महान भारत का वारिस हूँ; परंपरागत इस संप्रदाय की रक्ष करना मेरा कर्तव्य है। ऐसी भावना से वह अपने देश की सेवा के लिए तैयार रहता है।

वास्तव में इस देश में कई धर्मात्मा, वीरपुरुष, वीरनारियाँ पैदा हुई उन्होने संस्कृति की दृढ नीवं डाली है। हमारा भाग्य यही है कि हमारी पैतृक-संपदा के रूप में उज्वल इतिहास की परंपरा है। उनके आदर्शों के पालन करने से ही कोई विद्यावान-विज्ञानी बन सकता है। राष्ट्र के जीवन प्रवाह में वही विज्ञान अचल रहकर जीवन को सुशोभित करता रहता है। इसी सिलासले को आगे बढाने के लिए महात्माओं के जीवनों को संक्षिप्त रूप में आपके सामने रखता हूँ।

हे भारत के भाग्यदाता बालक-आइए-स्फूर्ति पाइए

एस.बी. रघुनाथाचार्य
प्रधान संपादक

परिचय

वह एक राजमंदिर है। एक शक्तिशाली राजकुमार प्रगाढनिद्रा में था। कोई छुपके से अंदर जाकर फुफकारने वाले नाग सर्पों को एक एक करके उस पर छोड रहे थे। उसका क्या होगा? पता नहीं! आश्चर्य! उसे डसनेवाले सभी सांप गिडगिडाकर मर गए। उसे कुछ नहीं हुआ। अहा! अद्भुत! कौन है यह महानुभाव? वह कोई और नहीं कौंतेय द्वितीयः अतिशय बल पराक्रम का प्रतिरूप है, उसका नाम है भीमसेन।

वारणावत में लाखगृह दग्ध होते समय सोने वाले भाइयों और माँ को अपनी भुजाओं पर बिठाकर सुरंग मार्ग से छिपते छिपते बाहर निकाल कर बचाया था। अपने आश्रयदाता के पुत्र बकासुर के लिए आहार के रूप में जाना पडा तो, अपने ऊपर जिम्मेदारी लेकर उस राक्षस का संहार कर लोक कल्याण के लिए अपनी शूरता का प्रदर्शन करनेवाला पराक्रमशाली है।

अपनी शक्ति और वीरता को लोकोद्धार के लिए उपयोग करने के लिए पीछे न हटने के उनके आदर्श को हमारे युवा को सीखना चाहिए। अब पढिए।

- प्रधान संपादक

भीमसेन

भीम के बिना महाभारत नहीं है

व्यास महर्षि ने अट्ठारह पुराण लिखे। उन्हें अष्टादश पुराण कहते हैं। उनमें 'महाभारत' अत्यंत प्रसिद्ध है। चारों वेदों का सार उसमें निहित होने के कारण इसे पंचम वेद कहते हैं। महाभारत भक्ति शक्ति और युक्ति का दर्पण है।

'महाभारत' में पांडव और कौरवों के बीच भयंकर युद्ध हुआ। कई योद्धा इसमें भाग लिए। लाखों सैनिक भी भाग लिए।

धृतराष्ट्र और पंडुराज दोनों भाई थे। विदुर भी उनके छोटे भाई थे। धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन, दुश्शासन आदि, पांडुराज के पुत्र धर्मराज, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव दो वर्गों में बंट कर युद्ध किए थे।

महाभारत में श्रीकृष्ण का बहुत बडा योगदान है। वे पांडवों की बुआ के बेटे थे। कुरु पांडवों के बीच संधिकार्य किया। संधिकार्य सफल नहीं हुआ। युद्ध अनिवार्य हुआ। श्रीकृष्ण पांडवों के पक्ष में रहकर युद्ध तंत्र चलाया।

पंचपांडवों में दूसरा भीमसेन है। अत्यंत शक्तिशाली वज्रकाय और गदायुद्ध और मल्लयुद्ध में निपुण था। कभी भी, किसी भी स्थिति में डरनेवाला नहीं था। स्थिर संकल्प रखता था। जो करना चाहता था वह जरूर करता था। अन्याय को नहीं सहता था। बडे भाई की बात को वेदवाक की तरह मानता था। माँ के प्रति अत्यंत भक्ति भाव रखता था। पत्नी द्रौपदी से बहुत प्यार करता था। भाइयों के लिए बडे आधारस्तंभ के रूप में थे।

भीमसेन के गुण, साहस, राक्षस संहार की कहानियाँ बच्चों और बडों दोनों के लिए अद्भुत विषय बनेंगी। भीमसेन के बिना महाभारत की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

जन्म : पांडुराज की पत्नी कुंती देवी थी। दूर्वास महर्षि ने उसे एक मंत्र का उपदेश दिया था। उस मंत्र के प्रभाव से जिस देवता को चाहे उसे प्रसन्न करके वरदान प्राप्त कर सकते हैं। उस मंत्र के प्रभाव से कुंती और उसकी सपत्नी माद्री ने पांच पुत्रों को प्राप्त किया।

धर्मराज के जन्म के बाद पांडुराज ने चाहा कि अपनी पत्नी के गर्भ में बडे भाई की सहायता के लिए एक शक्तिशाली पुत्र हो। यही बात पत्नी से कहा। तब वह वायुदेव से प्रार्थना करके उसके वरप्रसाद से दूसरे पुत्र को प्राप्त किया। रूप, तेजस और दृढता देखकर उसका नाम भीमसेन रखा गया। आकाशवाणी ने कहा कि भीमसेन भाई के सहायक बनकर अनेक अद्भुत कार्य करेगा।

जिस दिन कुंती को भीम पैदा हुआ, उसी दिन धृतराष्ट्र की पत्नी गाँधारी को दुर्योधन पैदा हुआ। दोनों आजन्म विरोधी बन गए। निरंतर एक दूसरे को मारने के लिए तत्पर रहते थे।

लोहा जैसा शरीर

भीमसेन के जन्म लेने के दसवें दिन पांडुराज के दंपति वनदेवी की पूजा करने पहाडों में गए थे। रास्ते में एक बाघ ने कुंती पर आक्रमण किया। कुंती डर के मारे गोद से बच्चे को पत्थरों पर गिरा दी। पांडुराज बाघ को भगाकर, डरते हुए बच्चे को देखा कि कुछ गहरी चोट तो नहीं लगी। शिशु को कुछ नहीं हुआ बालक वह खिलखिलाहट कर रहा था। तब उनको पता चला कि बच्चे का शरीर लोहे की तरह दृढ है, आगे देखना कि कैसे अद्भुत कार्य करेगा।

धृतराष्ट्र के दुर्योधन, दुश्शासन आदि सौ पुत्र पैदा हुए। 'वैश्या' नामक स्त्री से 'युयुत्स' नामक लडका पैदा हुआ। एक ही पिता के पुत्र होते हुए भी युयुत्स को कौरव न्यून दृष्टि से देखते थे। युयुत्स को पांडवों से और पांडवों को युयुत्स से लगन था।

माद्री का समागम

धृतराष्ट्र जन्मांध था। नाम के लिए वह राजा था। पूरा राज्यभार पांडुराज वहन करता था। ताऊ भीष्म, छोटे भाई विदुर सुझाव देते थे। पांडुराज ज्यादा समय तक जीवत नहीं रह पाये। उसके स्वर्गवास होने पर माद्री ने अपने दोनों पुत्र नकुल और सहदेव को कुंती के हाथों सौंपकर पति के साथ सहगमन किया।

भीष्म और विदुर के देखरेख में पांचों पांडव बिना किसी कमी के पल रहे थे और माँ को संतुष्ट करते थे। उनके बीच परस्पर प्रेम और एकता को देखकर लोगों को लग रहा था कि वे सब एक हैं।

भीम से जलन

दुर्योधन के मन में पांडवों के प्रति द्वेष तथा जलन था। उनके आपसी प्रेम और उनके प्रति भीष्म और विदुर के विशेष वात्सल्य को देखकर दुखी होता था। भीम का दृढ शरीर, विशाल वक्षस्थल, तीक्ष्ण दृष्टि, गंभीर चाल देखकर जलता था।

भाई के प्रति सम्मान की भावना

एक दिन कौरव एक बाग में खेलने गये थे। कुछ देर खेलने के बाद अलग अलग समूहों में बैठकर बातचीत करने लगे। इतने में दुर्योधन के भाइयों के सामने फलों से भरा आम का पेड दिखाई दिया। सब जल्दी जल्दी पेड पर चढकर आम तोडकर खाने लगे। भीम भी पेड के नीचे

जाकर उन से दो फल देने की माँग की। वे लोग उसकी बात न सुनकर उसे देखकर हँसने लगे। भीम को गुस्सा आया। उनको सबक सिखाना चाहा। इसी बीच अर्जुन पीछे से ''भीम भाई'' कर के पुकारा तो बात समझ में आयी। भीम दोनों हाथों से पेड पकडकर जोर से हिलाने लगा। पेड पर सभी बच्चे डर के मारे डालियों में चिपक गए। भीम और जोर से हिलाने लगा। सब नीचे गिर पडे, कमर टूट गए। दुर्योधन भीम के पास आकर डांटना चाहा। भीम, क्रोध-से उस से हाथा पाई के लिए तैयार हो गया। धर्मराज ने यह ठीक नहीं हो रहा है समझकर भीम को पुकारा 'भीमसेना!' भीम बिल्ली की तरह भाई के सामने आकर खडा हो गया। इस प्रकार भीम और दुर्योधन के बीच संघर्ष रोका गया।

तालाब में...

तब से दुर्योधन और उसके भाइयों को भीम पर मत्सर बढने लगा। उसे नुक्सान पहुँचाने के लिए प्रयत्न करने लगे।

एक दिन भीमसेन गंगा नदी के तट पर रेत के टीलों पर आराम से सो रहा था। उसे गाढ निद्रा में होते हुए देखकर कुरुपुत्र उसे रस्सी से बांधकर पुराने तालाब में फेंक दिए और आनंद से घर लौटे।

कुछ देर बाद भीमसेन की नींद खुली। बंधनों को तोडकर तालाब से ऊपर आया और अपने को नुकसान पहुँचानेवालों को दूर पर देखा। बाढ की तरह दौडकर उनके पास जाकर जो भी पकड में आये खूब पिटाई की।

डसने वाले सांप स्वयं मर गए

एक दिन भीम राज मंदिर में खूब खाकर सो रहा था। दुर्योधन द्वारा नियुक्त एक दुष्ट काले नाग उसके शरीर पर छोडा। वे उसे काट कर

स्वयं गिडगिडाते हुए मर गए। इससे पता चला कि भीम का खून सांपों के विष से भी खतरनाक है।

विष भी पच गया

एक बार भीम को विश्वास दिलाकर अत्यंत प्रेम से विष मिलाकर मृष्टान्न भेजा गया। यह राज जानकर युयुत्स भागते हुए आकर भीम को आग्रह किया कि भोजन में विष मिलाया गया है। भीम मुसकुराकर कहा कि विष भी मेरे लिए अच्छा ही है। उसने थाली में परोसे सभी पदार्थों को खा लिया। कुछ ही देर में सब कुछ पच गया।

युयुत्स ये सभी बातें कुंती को सूचित करता रहा। कुंती डर गयी। धर्मराज को बुलाकर कहा 'वत्स! आगे सावधान रहो। हमारे भीम को अकेला मत छोडना। उसे ताऊजी के बेटों के षडयंत्रों से बचाते रहना। धर्मराज ने मान लिया।

कौरवों को अपने प्रयत्न सफल न होने पर भीम के प्रति द्वेष और बढता गया।

लाख भवन राख हो गया

अंधे राजा को लगा कि भाई के बच्चें को समीप में रखना श्रेयस्कर नहीं है। कुछ दूर पर वारणावतपुर में उनके लिए भवन निर्मित कर कुंती के साथ पांडवों को वहाँ रहने के लिए भेजा। इसके पीछे दुर्योधन का षड्यंत्र था। दुर्योधन ने पांडवों की खबर देते रहने के लिए पुरोचन नामक व्यक्ति को नियुक्त किया। पांडवों की सेवा करने के लिए एक जन जाति की स्त्री और उसके पांच बेटों को रखा। इसका राज केवल दुर्योधन और धृतराष्ट्र को मालूम होगा।

पांडव वारणावत के लिए रवाना होते समय विदुर भीमसेन को अकेले बुलाकर सावधान किया कि ''बेटा! सावधान रहो! तुम्हारे लिए निर्मित भवन लाख से बना है। पुरोचन धोखेबाज है। उससे सावधान रहो। लाख भवन से जंगल तक एक सुरंग खुदवाऊँगा। खतरे के समय आप सब उसमें से बाहर निकल जाइए। मैं दुर्योधन की चाल पर नजर डालूँगा और समय समय पर आपको सूचित करता रहूँगा। धर्म आप के पक्ष में है। भीम क्रोध से दांत पीसने लगा।

पांडव लाख भवन में रहते छः महीने हो गए। आगामी बहुल चतुर्थी के दिन सब सोते समय लाख भवन को आग लगाने के लिए दुर्योधन ने पुरोचन को बताया था। यह बात जानकर विदुर ने भीमसेन को संदेशा भेजा। भीमसेन ने सबको सुरंग मार्ग से बचाया।

कृष्ण चतुर्थी के दिन आधीरात को सब सो रहे थे। बेचारी जनजाति की स्त्री अपने बच्चों के साथ बरामदे में सो रही थी। पुरोचन अपने काम में लगा हुआ था। भीम अपने लोगों को भुजाओं पर बिठाकर सुरंग मार्ग से सुरक्षित रूप से निकलने के लिए तैयार था। पुरोचन चुपके से लाख भवन के चारों ओर आग लगाकर भागने केलिए तैयार हो रहा था। भीम ने उसे पकडकर आग में फेंक दिया। वह आग में जलकर मर गया। बेचारी दासी और उसके पुत्र भी राख हो गए।

भीम सो रही माँ और भाइयों को अपने भुजाओं पर उठाकर सुरंग मार्ग द्वारा सुरक्षित रूप से जंगल पहूँचा।

सुबह तक लाख भवन जल कर राख हो गया था। उसमें जले शवों को देखकर लोग दुखी हुए कि पांडव अग्नि की आहुति हो गए। दुर्योधन आदि मन ही मन बहुत खुश हुए। धृतराष्ट्र ने छोटे भाई के बच्चों के लिए झूठी आँसू बहाई।

विदुर सच्चायी जानता था। उनके द्वारा भीष्म जानता था। वे बाहर व्यक्त न करके मन ही मन खुश हुए।

समय ही बताएगा

सुबह होते ही कुंती और उसके चारों पुत्र नींद से उठकर चकित हो गए। उन्हें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। भीम ने उन्हें सब कुछ बताया। वे आश्चर्यचकित हो गए।

भीम बहुत क्रोधित हो गया। सभी कौरवों को एक क्षण में मारने की बात कही। धर्मराज ने उसे शांत करते हुए कहा - ''भाई! ऐसे समय में शांत होना चाहिए। क्रोध से समस्या को सुलझा नहीं सकते हैं। समय ही सबका समाधान देगा। इसलिए प्रतीक्षा करेंगे। यह भी हमारे लिए अच्छा ही है। हम देशाटन करेंगे।'' फिर सब देशाटन के लिए निकले।

वे पैदल चल रहे थे। चलने में दिक्कत महसूस करने वाली माँ और भाइयों को भीम अपने भुजाओं पर उठाकर आगे बढ रहा था। ऐसा चलते चलते एक गाँव पहुँचे। सब को आराम करने केलिए कहकर, भीम गाँव में जाकर सब के लिए खाना लाया। सब को खिलाकर बचा हुआ खुद खाया। अपने लोगों के कष्ट को देख कर भीम चिंतित होने लगा।

तुम कौन हो?

कोई पीछे से पीठ पर थपथपाने जैसा लगा तो भीम ने पीछे मुडकर देखा। एक सावले रंग की नव युवति, सुंदर रूप से मुस्कुराते हुए सामने खडी थी।

भीम ने कहा ''तुम कौन हो? क्यों आयी हो?'' उसने कहा ''हे वीर मैं एक काम के लिए आयी तो दूसरा हुआ।''

''अर्थात्?'' भीम ने प्रश्न किया

वह बोलने लगी - ''मेरे भाई महावीर है। लेकिन दुष्ट हैं। आप सब को एक साथ खाने के लिए लाने केलिए मुझे भेजा है। लेकिन आप को देखकर अपना काम भूल गयी। कृपा करके मुझे ग्रहण कीजिए।''

''यह संभव नहीं है। उत्तम स्त्री के धर्म को अपनाओ। तुम अपनी इच्छा छोडो। हम बहुत कठिनाइयों से जूझ रहे हैं।''

''मैं आपकी समस्याएं दूर करूँगी। मैं काम रूप में, आपको जहाँ चाहे वहाँ छोड दूँगी। मेरा नाम हिडिंबी और मेरे भाई का नाम हिडिंबासुर है'' इतने में हिडिंबासुर पंखों वाले काले पहाड की तरह वहाँ आ गया।

भयानक युद्ध

हिडिंबी डर के मारे भीम के पीछे छुप गयी। हिडिंबासुर चिल्लाने लगा- ''नराधम! जानते हो मैं कौन हूँ? इस जंगल का अधिकारी हूँ। आप सबको टुकडे टुकडे करके खालूँगा।'' फिर बहन की ओर देखकर कहने लगा - ''पापी! तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुझे किस लिए भेजा था? भूल गयी? इस नीच के साथ प्रेम कलाप कर रहे हो? और उसे मारने के लिए आगे बढा तो भीम उसका हाथ पकडकर दूर ले गया। ताकि सोने वालों को तकलीफ न हो।

वहाँ दोनों युद्ध करने लगे। पेड उखाड कर एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। पेड खत्म होने पर मल्ल युद्ध के लिए तैयार हो गए। हाथियों व पर्वतों की तरह भयानक युद्ध किए।

हिडिंबासुर मर गया

आवाज सुनकर कुंती और चारों पुत्र जाग गए। देखा कि भीम किसी से लड रहा था। धर्मराज सामने खडी सुंदरी को देखकर आश्चर्यचकित

हुआ। वह उन्हें प्रणाम कर के सारी कथा सुनायी। अर्जुन युद्धस्थल पर भागते गया। भीम को प्रोत्साहित किया। अर्जुन को देखकर भीम में और भी शक्ति आयी। हिडिंबासुर को हाथों से उठाकर जोर से नीचे फेंक दिया। मुख पर जोर से मारा। हिडिंबासुर खून में लथपथ होकर चीतकार करते हुए मर गया।

हमें भाभी होना चाहिए

हिडिंबासुर का वध करके भीम अर्जुन के साथ वापस आया। वहाँ हिडिंबी को देखकर क्रोध से कहा कि तुम्हें भी तुम्हारे भाई के यहाँ भेजूँगा। तो कुंती ने उसे शांत करके कहा - ''बेटा! हिडिंबी राक्षस कुल में पैदा होने पर भी उसका स्वभाव अच्छा है। मन से तुम्हें चाहती है। हम सबका हित चाहकर ही आनेवाली विपदा के बारे में बताया है। हम सबको बचाना चाहा। धर्मराज को भी इसका व्यवहार अच्छा लगा।'' माँ की बाते सुन कर भीम उलझन में पड गया। भाई की ओर देखा तो उन्होंने भी कहा कि ''भीमसेन! माँ की बात मना मत करना'', नकुल सहदेव ने भी मुक्त कंठ से कहा ''भाई! ऐसी रूपवती, गुणवती, उपकार करनेवाली हमारी भाभी बननी चाहिए। सबको प्रसन्न किए हिडिंबि के साथ विवाह करने के लिए भीम राजी हो गया। हिडिंबी पुलकित हुई। सब प्रसन्न हुए।

असली नाम कमलपालिका

हिडिंबी के साथ सभी वहाँ से निकल कर शाम तक शालिहोत्र महर्षि के आश्रम पहुँचे। मुनि उन्हें सादर आतिथ्य दिया। उसी समय व्यास महर्षि भी वहाँ आए। उन्होंने कुंती से कहा ''माता! अंधराज पुत्रमोह में आपके साथ जो अन्याय किया है उसे भूल जाइए। तुम्हारे पांचों पुत्र महाशक्तिशाली हैं। कुल का नाम रोशन करेंगे। आप लोग कुछ

समय तक प्रच्छन्न रूप से रहिए। आप को सब शुभ होगा। हिडिंबी का वास्तविक नाम कमलपालिका है। यह भीम के लिए उपयुक्त पत्नी है। उसके गर्भ में अचिरकाल में एक बलवान पुत्र पैदा होगा।'' व्यास सबको आशीर्वाद देकर चले गए।

घटोत्कच का जन्म

भीम का कमलपालिका द्वारा एक लडका पैदा हुआ। वह शिशु पिता से बढकर तेजवंत था। धर्मराज ने उसका नाम घटोत्कच रखा। उस समय सारे भूतगण घटोत्कच की सेवा करने के लिए तैयार हो गए। घटोत्कच अपने दादी, ताऊ तथा चाचाओं को प्रणाम किया। वे जब भी उसे बुलाएंगे तब तुरंत हाजिर होने का वादा करके अपनी माँ को पीठ पर बिठाकर आकाश मार्ग से अंतर्धान हो गया।

एकचक्रपुर में ब्राह्मणवृत्ति

भीम वहाँ से निकलकर, माँ और भाइयों को अपने कंधे पर बिठाकर गाँवों, शहरों, नदीनद, पर्वत और घाटियाँ पार करते करते 'एकचक्रपुर' नामक गाँव पहुँचे। वहाँ के सब लोग ब्राह्मण होने से वे भी ब्राह्मण वेष धारण करके, एक सद्ब्राह्मण के घर में आश्रय प्राप्त किए। इस घर के मालिक और गाँव वाले उन्हें बहुत सम्मान करते थे।

भयानक रुदन

पांडव गाँव में भिक्षाटन करके जीवन बिताने लगे। एक दिन भीम माँ के साथ घर पर ही था। बाकी सब भाई भीख माँगने बाहर गए थे। घर में गृहस्थ के परिवार के सभी लोग अचानक रोने लगे। भीम ने कारण पूछने के लिए उनके यहाँ माँ को भेजा। माँ ने जाकर पता लगाया।

बकासुर का आतंक

उस गाँव के समीप एक पहाड पर बकासुर नामक राक्षस रहता है। वह गाँव में आकर मुनष्य, पशु जो भी पकड में आते थे खा लेता था। उसकी भूख भयानक थी। पहाड जैसी अन्नराशी, जितने भी मनुष्य और पशुओं को अनगिनत रूप से खा लेता था। गाँव के सभी लोगों ने मिलकर विचार करके उस राक्षस से एक समझौता कर लिया। प्रतिदिन बारी बारी से गाँव के एक एक घर वाले उस राक्षस को एक गाडी भर अन्न, दो भैंसे और एक आदमी को आहार के रूप में भेजें ताकि वह गाँव में अराचकता न फैलाएं। उस दिन उस गृहस्थ की बारी थी जिसने पांडवों को आश्रय दिया था। उन्हें अपने इकलौते बेटे को राक्षस के आहार के रूप में भेजना पड रहा था। इसलिए वे अत्यंत दुखी थे।

गाडी के साथ बकासुर के पास

भीम ने सारी बातें सुनी। उतावले होकर माँ से उन्हें कहलवा कर भेजा कि बकासुर के पास उनके बेटे के स्थान पर स्वयं जाएगा। अपने पुत्र की वीरता और क्षमता पर विश्वास होने से कुंती ने गृहस्थ को समझाया। माँ बेटे के त्याग को देखकर वे उनकी प्रशंसा करने लगे।

गाडी में मृष्टान्न भर दिए, उसे दो मोटे भैसों को बाँध कर भीम को सौंपा गया। भीम माँ का आशीर्वाद लेकर बकासुर के पहाड की ओर गाडी चलाते हुए प्रस्थान हुआ।

बकासुर का अंत

गाडी धीरे - धीरे चलाते हुए भीम ने रास्ते में पूरा मृष्टान्न और मिठाइयाँ खा लिया। बकासुर भूख से तडप रहा था। गाडी आने में देरी

होने पर आग बबूला हो रहा था। भीम का रूप और व्यवहार देखकर और क्रोधित होने लगे। भीम ने गाडी थोडी दूर पर खडा करके दाये हाथ से खाते हुए बाये हाथ से बकासुर को अपने पास आने के लिए इशारा किया। बकासुर क्रोध से पहाड के नीचे कूदकर भीम के पास आते हुए

कहा - ''अरे! नराधम! बिना डर के मेरा सारा अन्न खा रहे हो, देखो मैं तुम्हें क्या करूँगा।''

'अरे राक्षसाधम! आज तुम्हारा अंत करूँगा! देखो मेरा प्रताप' भीम ने कहा।

दोनों में मुठभेड हुआ। सामने वाले वृक्ष निकाल कर एक दूसरे पर फेंका। फिर द्वंद्व युद्ध पर उतरे। मुष्ठि युद्ध करने लगे। एक दूसरे पर आघात करते हुए घोर युद्ध किया। बकासुर की शक्ति कम होती गयी। भीम की शक्ति बढती गयी। भीम पूरी शक्ति लगाकर बकासुर के पीठ पर प्रहार किया। राक्षस खून में लथपथ हो गया। नीचे गिर पडा। भीम उसे दाये पैर से फिर प्रताडित किया। वह चक्कर लगाते हुए गिर पडा और प्राण छोड दिया।

लोग आश्चर्यचकित हुए

भीम बकासुर का मृत शरीर गाडी पर डालकर गाँव लाया। गाँव के सभी लोग घरों से बाहर आकर इस दृश्य को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। इसी बीच धर्मराज भिक्षाटन से वापस लौटा था। सब प्रसन्न हुए। उस दिन एकचक्रपुर में उत्सव मनाया गया। बकासुर की पीडा से मुक्त करने के लिए गाँव के सभी बाह्मण भीम और कुंती माता के प्रति आभार व्यक्त किए। उस दिन से गाँव के लोग उन्हें देवताओं की तरह भक्ति और श्रद्धा से सम्मान देने लगे।

द्रौपदी स्वयंवर

एक दिन एक ब्राह्मण देश विदेशों में भ्रमण करके पांडवों के अतिथि बनकर आया। बातों बातों में उसने कहा कि पांचाल देश की राजधानी कापिल्य नगर में द्रुपदराज की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने

वाला है। यदि उन्हें इच्छा हो तो, वह वहीं जा रहा है उन्हें अपने साथ ले जाएगा। ब्राह्मण वेषधारी पांडव बडे उत्साह के साथ उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गए।

द्रुपदराजा ने द्रौपदी स्वयंवर की घोषणा की। एक मत्स्ययंत्र की स्थापना की। वह एक स्तंभ पर घूमता रहेगा, नीचे पानी में उसकी छाया देखते हुए छेद करनेवाले का वरण द्रौपदी करेगी। स्वयंवर का मंटप नाना देशों के राजकुमारों से भरा हुआ था। वे तरह तरह की वेष-भूषा धारण करके सुंदर और शोभायमान थे। इस स्वयंवर में श्रीकृष्ण, बलराम, दुर्योधन, चेदी के राजकुमार शिशुपाल, जरासंध आदि भी आये थे। सभी राजकुमार प्रयत्न किए लेकिन किसी ने इसका छेदन नहीं कर पाये।

धर्मराज ने धनुष विद्या में निपुण अपने छोटे भाई अर्जुन को आदेश दिया। अर्जुन उठकर बडे भाई को प्रणाम करके स्वयंवर मंटप के समीप पहुँचा। धनुष उठाकर बाण संधान कर, मत्स्ययंत्र की छाया नीचे पानी में देखते हुए छेदित किया। दर्शक सब चकित हो गए। द्रौपदी ने उसके गले में माला डाली।

किसी ने पहचाना नहीं

श्रीकृष्ण के अलावा अर्जुन को किसी ने पहचाना नहीं। सब लोग उसे ब्राह्मण समझे थे। शिशुपाल, दुर्योधन ने द्रुपद के द्वारा क्षत्रियों को अपमान मानकर उसे दंडित करने का प्रयास किया तो अर्जुन ने भीम की सहायता से उन सबका सामना करके हरा दिया।

पांचाली परिणय

पांडव पैदल चलकर माँ के पास द्रौपदी को ले गए। उन्होंने कहा कि एक अपरूप फल लाए हैं। तब माँ ने सब को बाँटकर खाने का आदेश

दिया। माँ होने के नाते उसने सभी बच्चों के प्रति समभावना व्यक्त की। इस धर्म संकट को श्रीकृष्ण और सात्यकी से दूर कराया। द्रौपदी के पाँच पति होने से पंचभर्तृका हुई।

पांडवों को आधा राज्य

यह सब होने के कुछ दिनों बाद दुर्योधन को पता चला कि मत्स्ययंत्र का विच्छेद करने वाला और कोई नहीं अर्जुन था और उसकी सहायता करके उन्हें भगाने वाला भीम था। लाख भवन में जलने से पांडव बच निकले।

फिर दुर्योधन अपने बृंद से चर्चा करके पिता को मनाकर पांडवों को हस्तिनापुर बुलवाया। भीष्म और विदुर से सूचना प्राप्त कर कृष्ण और सात्यकी ने धृतराष्ट्र से विचार विमर्श किए। धृतराष्ट्र ने भीष्म के सुझाव के अनुसार पांडवों को आधा राज्य दिया।

खांडवप्रस्थ इंद्रप्रस्थ हुआ

नूतन राज्य के लिए इंद्रप्रस्थ राजधानी बनी। पांडव प्रजानुरंजक रूप से राज कर रहे थे। धर्मराज ने मय की सहायता से इंद्रप्रस्थ को नूतन राजधानी के रूप में सुंदर और अद्भुत रूप से निर्मित किया। किले के ऊँचे ऊँचे प्राकार, आकाश को छूनेवाले मणिमय सौध भूलोक स्वर्ग सा दिखने वाले इस नूतन नगर का नाम व्यास ने खांडवप्रस्थ का नाम इंद्रप्रस्थ में बदल दिया।

मयसभा मंदिर

नूतन राजनगर के प्रवेश का उत्सव अत्यंत वैभव पूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। धर्मराज के पट्टाभिषेक का उत्सव श्रीकृष्ण के नेतृत्व में हुआ। बंधु

मित्र सामंत, नागरिक अधिक संख्या में आये। मय ने खांडववन दहन के समय अग्निदेव से अर्जुन को बचाने के बदले, कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इस अद्भुत राजभवन को निर्मित किया।

दुर्योधन - अपमानित

धर्मराज ने राजसूय याग पूरा किया। उस याग को देखने के लिए बडी संख्या में लोग आए। दुर्योधन भाइयों, कर्ण, शकुनि आदि के साथ आया था। अर्जुन ने उन सब को मयसभा की विशेषताएँ दिखाई। उन्होंने उस अद्भुत सुंदर मंदिर को संभ्रमित होकर देख रहे थे। जहाँ ऊँचाई और खाई दिखता है वहाँ वास्तव में समतल प्रदेश होता है। जहाँ पानी का भ्रम होता है वहाँ पानी नहीं होता है। जहाँ पानी नहीं दिखता है वहाँ पानी होता है। दीवार पर द्वार न होते हुए होने का भ्रम होता है। जहाँ द्वार होता है वह दिखता नहीं। उस मंदिर को देखते समय दुर्योधन एक दो बार हताश हुआ। एक स्थान पर द्वार है मानकर आगे बढा तो दीवार से टकराया। मंदिर के ऊपरी मंजिल से यह दृश्य देखकर द्रौपदी को हँसी आयी। उसकी सहेलियों ने दुर्योधन का मजाक उडाते हुए कहा कि - ''महारानी! आप के बडे ससुर जी बिना आँखों के अंधे हैं तो आप के जेठ जी आँखेवाले अंधे हैं।'' यह बात दुर्योधन ने सुनी। एक जगह तालाब जैसा दिखा। दुर्योधन अपनी धोती थोडा ऊपर उठाकर चलने लगा तो वहाँ पानी नहीं था। वह पन्नों और इंद्रनील मणियों से जडित तालाब था। दूसरे स्थान पर पूरा सपाट जमीन है समझकर चलते समय दुर्योधन आचानक तालाब में गिर पडे और पूरे कपडे भीग गए। इस दृश्य को ऊपर से देखकर द्रौपदी खूब हँसने लगी। वह सर उठाकर द्रौपदी को क्रोध से देखा। उसी समय उसके मन में प्रतिशोध की भावना जागृत हुई। अपमान के भार से मन कुंठित हुआ और सभा भवन छोडकर अपने आवास

लौटे। पांडवों के जितना समझाने का प्रयत्न करने पर भी वह वहाँ न रूक कर दूसरे दिन ही परिवार के साथ वापस लौट गया।

दुर्योधन अपने मामा शकुनि के साथ मिलकर विचार विमर्श किया। पांडव और द्रौपदी को अपने मंदिर में नौकर बनाकर काम कराने की इच्छा प्रकट की। मुख्य रूप से द्रौपदी से प्रतिशोध लेना चाहता था।

मायाद्यूत

धर्मराज को द्यूत क्रीडा बहुत पसंद था। यह जानकर दुर्योधन ने उसे द्यूत क्रीडा के लिए निमंत्रण भेजा छल से उसे हराकर प्रतिशोध लेना चाहा। भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ने धर्मराज को द्यूत क्रीडा में भाग लेने से रोकने का प्रयास किया। लेकिन रोक नहीं पाये। विदुर ने भी मनाने का प्रयास किया। लेकिन धर्मराज ने नहीं सुनी।

धर्मराज दुर्योधन के साथ द्यूत क्रीडा में भाग लिया। शकुनि ने छल से धर्मराज को द्यूत क्रीडा में हराया। इस द्यूत क्रीडा में धर्मराज ने अपना राज्य, भाई और पत्नी द्रौपदी को भी दाँव में लगाकर हार गया। इतना ही नहीं बारह वर्ष वनवास और एक वर्ष अज्ञातवास भी करना था। द्यूत क्रीडा कितना बुरा है इसका उदाहरण धर्मराज है। कपट द्यूत पर क्रोधित होकर भीम दुर्योधन और दुःश्शासन को मार मार कर टुकडे करने के लिए तैयार हो गया तो धर्मराज ने उसे रोका। भीम ने अपने क्रोध को दबा के रखा।

इन दुष्टों को टुकडे टुकडे कर दूँगा

पांडवों की कठिनाइयाँ प्रारंभ हुई। प्रतिशोध की भावना से दुर्योधन ने द्रौपदी को राज सभा में खींचकर लाने के लिए दुःश्शासन को आदेश

दिया। दुःश्शासन ने राजभवन में एकवस्त्र होने पर भी द्रौपदी को बाल पकडकर भरी सभा में खींचकर लाया। दुर्योधन उसे तिरछी नजर से देखकर अपने गोद में बैठने का संकेत किया। इतने घृणित दृश्य को सभा में सभी चुपके से देख रहे थे। भीम अपने क्रोध को रोक नहीं पाया। उसने कहा - ''भाई! धर्मराज! आपने राज्य, भाई और द्रौपदी को हार गए फिर भी मैं ने सहन किया। अब भरी सभा में हमारी धर्मपत्नी को अपमानित करते हुए मैं नहीं देख सकता। एक एक को टुकडे टुकडे कर दूँगा। मुझे अनुमति दीजिए।'' धर्मराज ने कहा कि ''भाई शांत रहो। धर्म का ही विजय होगा।'' भीम कुछ न कर पाने की स्थिति में चुप रहा।

स्वयं हार कर मुझे हारा?

भरी सभा में द्रौपदी ने धर्म संदेह व्यक्त किया कि ''धर्मराज स्वयं हार कर मुझे हारा या मुझे हारने के बाद स्वयं हारा? बताइए।'' किसी ने जवाब नहीं दिया। तब विदुर ने धीरे धीरे कहा - ''धर्मराज पहले स्वयं को हारकर तुझे हारा।'' फिर द्रौपदी ने कहा - ''पहले स्वयं को हारने वाले को मुझे दाँव में रखने का अधिकार कैसे होगा? आप में धर्मज्ञ कोई जवाब दीजिए।'' किसी ने कुछ नहीं कहा। विकर्ण ने उठकर सवाल किया कि - ''आप में उसके प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते है? क्या?'' तब कर्ण ने उठकर कहा यहाँ बडों के बीच में तुम छोटे को क्या काम है? कहकर उसे चुप कराया।

अद्भुत अक्षय वस्त्र

दुःश्शासन अमानवीय रूप से द्रौपदी का वस्त्रापहरण करते हुए भरी सभा में उसे अपमानित कर रहा था तो द्रौपदी निस्सहाय स्थिति में

दोनों हाथ ऊपर उठाकर श्रीकृष्ण की प्रार्थना करती रही। श्रीकृष्ण ने उसे अक्षय वस्त्र प्रदान करके उसके मान की रक्षा की। द्रौपदी के वस्त्र जितने खींचते रहे उतने आ ही रहे थे। दुःश्शासन थक कर सर झुकाया।

भीम की प्रतिज्ञा

भीम ने भरी सभा में प्रतिज्ञा की कि ''मैं दुःश्शासन को मारकर, उसका रक्त पीऊँगा और उसके रक्तसिक्त हाथों से द्रौपदी के खुले बालों को बांधूँगा। मदोन्मत्त दुर्योधन के जाँघ तोड दूँगा। अपने बायें पैर से उसका सर फोडूँगा।''

बडे संरक्षक

पांडव अपना राज्य, संपदा सब छोडकर द्रौपदी के साथ वनवास के लिए निकले। माता कुंती को अपने पास ही रहने का प्रबंध विदुर ने किया।

अपने अमूल्य आभरण और वस्त्र छोड कर सादे वस्त्रों में वनवास के लिए निकले पांडवों को देखकर बडे बुजुर्ग, बाल-बच्चे सब रोने लगे। ''वनवास के समय उनकी रक्षा करने के लिए उनके साथ भीम है'' यह समझकर वे सांत्वना पाये।

अक्षय पात्र

धर्मराज की प्रार्थना पर सूर्यदेव प्रत्यक्ष होकर उसे सुवर्णपात्र प्रदान किया। भीम उस समय वहीं था। वह अक्षयपात्र था। उसके सामने खडा होकर प्रार्थना करने से जितने लोगों को चाहिए तो उतने लोगों के लिए मृष्टान्न तैयार हो जाता है। उस पात्र की सहायता से धर्मराज अपने साथ रहनेवाले लोगों के साथ साथ अतिथियों को भी खिलाता था।

किम्मीरासुर संहार

उस रात को भीम के अलावा सब लोग सो रहे थे। भीम पहरा दे रहा था। उसी समय कहीं से भीषणरव सुनाई दिया। वह बकासुर के भाई, हिडिंबासुर के मित्र किम्मीरासुर की आवाज थी। किम्मीर भयानक राक्षस था। उससे मनुष्य ही नहीं सभी जीव जंतु भी डरते थे। वह राक्षस भीम पर उछल पडा। भीम ने उसके साथ भयानक युद्ध किया। कुछ ही समय में किम्मीर की गदा टूट गयी। वह दूसरा शस्त्र लिया। भीम ने उसे भी तोडा। किम्मीर ने राक्षस माया का प्रयोग किया। हजारों राक्षस शस्त्रों के साथ भीम पर प्रहार करने लगे। अर्जुन ने भीम को इशारा किया। भीम ने गदा दण्ड पर मंत्र का प्रयोग किया तो हजारों गदाएं उत्पन्न होकर, एक एक गदा एक एक राक्षस को मार कर गायब हो गया। भीम के सामने किम्मीर की माया नहीं टिक पायी।

फिर किम्मीर बडे बडे वृक्षों को उखाडकर भीम से युद्ध करने लगा। वृक्ष नष्ट हो गए। किम्मीर की शक्ति क्षीण हो गयी। जैसे गरुड सांप को पकडता है वैसे भीम किम्मीर को पकडकर अपने गदा दंड से उसका सर फोड डाला। किम्मीर का अंत हुआ। भीम की युद्ध कौशल देखकर धर्मराज ने उसकी प्रशंसा की। द्रौपदी, अर्जुन, नकुल और सहदेव भी उनका अभिनंदन किया।

धर्मराज ने काम्यवन में भाइयों के द्वारा निर्मित कुटीर में द्रौपदी के साथ कुछ दिन आनंद के साथ बिताया।

उपहार दूँगा

एक दिन भीमसेन और द्रौपदी वनविहार कर रहे थे। उस समय आकाश में एक यक्ष दंपति विमान पर विचरण कर रहे थे। उनके विमान

से एक अद्भुत सौरभ का दिव्य पुष्प नीचे गिर पडा। द्रौपदी उसे देखकर बहुत खुश हुई। भीम से कहा कि ऐसा ही पुष्प मुझे चाहिए। भीम ने वादा किया कि चौदहों लोकों में वह पुष्प कहीं भी हो लाकर द्रौपदी को उपहार के रूप में दूँगा। द्रौपदी ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

पूँछ हटाकर जाओ

भीम सौगंधिका पुष्प लाने के लिए निकला। रास्ते में सुंदर गंधमादन पर्वत नयनानंदकर था। प्रशांत वातावरण में एक पर्णकुटीर था। उसके सामने एक वृद्ध वानर खडा था। भीम उस ओर आने की ध्वनि सुनी। उस वानर के चेहरे पर अनिर्वचनीय आनंद प्रफुल्लित हुआ। वह कोई और नहीं राम भक्त हनुमान चिरंजीव वायुनंदन, अंजनीपुत्र।

उस भक्तश्रेष्ठ ने अपना रूप वृद्धावस्था में बदल दिया।

राम नाम जपते हुए कुछ दूर आगे बढा। भीमसेन के मार्ग में अपना पूँछ फैलाकर जमीन पर लेट गया। भीम उसके समीप आया। लेटे हुए वानर को देखकर प्रार्थना की ''मान्यवर! वानर महाशय! थोडा हटिए।''

''बेटा! मुझे हटने की शक्ति नहीं है।'' वानर ने कहा।

''ठीक है! अपनी पूँछ को तो हटाइए।''

''इतनी ही शक्ति होती तो जमीन पर क्यों लेटता! कृपया तुम ही हटाकर जाओ।'' हनुमान ने कहा।

हम दोनों वायु पुत्र हैं

भीम अपने बाये हाथ से पूँछ हटाने का प्रयास किया। पूँछ हिला नहीं। दोनों हाथों से उठाने का प्रयोग किया। फायदा नहीं हुआ। भीम को आश्चर्य हुआ। ''अपनी जिंदगी में यह पहला अनुभव है। मेरे बराबरी कोई न करने की स्थिति में यह एक महान विशेषता है। यह आंजनेय स्वामी तो नहीं।'' भीम मन ही मन सोचने लगा।

अचानक वानर यौवनोत्साह से उछलकर सामने खडा हो गया। भीम को बाहों में लेकर कहा - ''भाई! तुम्हारी ऊहा सही है। मैं हनुमान हूँ। तुम्हारे बडे भाई। हम दोनों वायु के पुत्र हैं। वायुदेव के वरदान से जन्मे हैं। तुम्हारी शक्ति और भक्ति की परीक्षा करने के लिए मैं ने ऐसा किया है। तुम सही मायने में मेरे छोटे भाई हो, मैं बहुत खुश हूँ। तुम्हारा काम अवश्य सफल होगा। सौगंधिकापुष्प जहाँ मिलता है वहाँ तुम्हें तुरंत ले जाऊँगा।'' भीम को अपनी भुजाओं पर बिठाकर कुबेर के उपवन में सौगंधिका सरोवर के पास छोडा। राम-रावण युद्ध के समय रामलक्ष्मण को उठाये भुजाओं पर आज भीमसेन को ढोना, कितना आश्चर्य की बात है।

कुबेर से मित्रता

सौगंधिका सरोवर का पहरा करनेवाली यक्ष भीम की वीरता से परिचय न होने के कारण उसका सामना करके पराजित हो गए। भीम की शरणागति मांगी। भीम ने उन्हें क्षमा कर दी। इसी बीच घटोत्कच की सहायता से धर्मराज भी वहाँ पहुँचे। भाई और पुत्र को देखकर भीम ने संतोष व्यक्त किया। भीम ने हनुमान की कथा सुनायी तो वे सब मन ही मन हनुमान को भक्ति पूर्वक प्रणाम किए। उसी समय यक्षराज कुबेर वहाँ आया। पांडवों को देखकर उन्हें सम्मानित किया और उनके साथ मित्रता का हाथ बढाया।

जो होना था उसे गंधर्वों ने किया

चित्रसेन नामक गंधर्व राजा अपनी राणियों के साथ एक सरोवर में जलक्रीडा करते समय दुर्योधन आदि ने उन्हें अपमानित किया। दोनों के बीच संघर्ष हुआ। चित्रसेन स्मरण करने मात्र से हजारों गंधर्व वीर प्रत्यक्ष हो गए। दुर्योधन, कर्ण, दुःश्शासन एक ओर और चित्रसेन और उसके गंधर्व वीर दूसरी तरफ खडे होकर युद्ध करने लगे। दुर्योधन कर्ण, दुःश्शासन विरथ होकर जमीन पर मूर्छित होकर गिर पडे। चित्रसेन उनको बंदी बनाकर गंधर्वलोक ले जाने लगा। दुर्योधन की पत्नी भानुमती को जब यह समाचार मिला तो वह घबरा गयी। उसने अपने सेवकों के द्वारा धर्मराज को संदेश भेजा और उसकी सहायता माँगी। धर्मराज ने गंधर्वराजा से लडने के लिए भीम आदि को भेजा। भीम आदि गंधर्व को हराकर, बंधित कौरव प्रमुखों को धर्मराज के पास ले आए। देवराज इंद्र ने दुर्योधन को सबक सिखाने के लिए चित्रसेन को नियुक्त किया था। दुर्योधन को किए का फल मिला। इसलिए यह कहावत प्रचलन में आया है कि जो होना था उसे गंधर्वों ने किया।

शर्म से सर झुकाकर खडे हुए दुर्योधन, दुःश्शासन और कर्ण को धर्मराज ने बंधनमुक्त कराया। कभी ऐसा अनुचित कार्य न करने का सुझाव दिया। भीम मन ही मन खुश हो रहा था।

उन्हें होम करने के लिए आएंगे

एक बार हस्तिनापुर से द्वैतवन में धर्मराज को एक निमंत्रण आया। दुर्योधन एक वैष्णव याग करना चाहते हैं। इसमें भाग लेने के लिए धर्मराज को भाई, मित्र और समस्त मुनियों के साथ भाग लेने का आमंत्रण दिया गया। धर्मराज इस पर चुप रहा। लेकिन भीम ने क्रोधित होकर संदेश लाये व्यक्ति से कहा कि दुर्योधन कपट बुद्धि से हमारे वनवास दीक्षा को भंग करने की योजना बनाता है तो क्या हम पागल है कि हम समझ न पाये। दुर्योधन से कहो कि बारह वर्ष वनवास और एक वर्ष अज्ञातवास निर्विघ्न रूप से पूरा करके चौदहवें वर्ष दुर्योधन और उसके दुष्टबृंद को यज्ञकुण्ड में यज्ञपशु बनाकर होम करने के लिए हम खुशी खुशी आयेंगे।'' भीम के कटुवचन सुनकर धर्मराज ने कुछ नहीं कहा। भीम का समाधान सही है समझा होगा।

सैंधव को सही सबक

काम्यवन में पांडव तृणबिंदु महर्षि के आतिथ्य में थे। उनका हाल चाल पूछने के लिए वेदव्यास आये थे। तब सभी मुनि उन्हें सम्मानित किए। व्यास ने मुनियों तथा पांडवों को आशीर्वाद देकर चले गए।

क्षमा माँगो

एक दिन पांडव शिकार पर गये थे। तृणबिंदु महर्षि और उनके शिष्य कहीं यज्ञ कराने गये थे। पर्णशाला में द्रौपदी अकेली थी। उस ओर रथ पर जानेवाली दुर्योधन की बहन दुस्सला के पति सैंधव ने द्रौपदी को

देखा। उसका सौंदर्य उसे विवश किया। अपना नाम बदलकर उसके पास आया और सरस बाते करने लगा। द्रौपदी ने उसे पहचानकर कहा ''भाई! हमारे पति शिकार पर गये है। अभी आएँगे। आप थके हुए लग रहे हैं। बात भी ठीक नहीं कर पा रहे हैं।'' तब होश में आकर उसने कहा ''तुम द्रौपदी हो? कोई बात नहीं। क्यों पाँच पतियों की सेवा करते हुए जंगल में रहते हो मेरे साथ आओ। राज भवन में सभी सुविधाएँ भोग सकती हो।'' बलपूर्वक द्रौपदी को उठाकर अपने रथ पर डालकर ले जा रहा था कि पांडव वापस आ गए। इस दृश्य को देखा। उन्हें देखते ही द्रौपदी रथ से नीचे उछल पडी। सैंधव डर के मारे भागने लगा तो भीम रथ को रोक कर उसके बाल पकडकर नीचे खींचकर धर्मराज के पैरों तले डाला। लात मारकर कहा ''पापी! काम से संबंध को भी भूल गये हो हमारे बहनोई होने के नाते बच गए हो, वरना तुम्हें चीर लेता। धर्मराज से क्षमा माँगो। कभी ऐसा घृणित काम मत करना। सैंधव ने शर्म के मारे सर झुकाकर धर्मराज से माफी माँगी। धर्मराज ने क्षमा की। सैंधव रथ में चढकर शीघ्र वहाँ से भाग निकला। भीम चाहे तो उसे मार सकता था।

अज्ञात में रसोइया

पांडवों ने कई कठिनाइयाँ सामना करके, कई विजय प्राप्त करके बारह वर्ष पूरा किए। एक वर्ष अज्ञातवास करने के लिए विराटराज के दरबार में काम में लग गये।

धर्मराज कंकुभट्टु से विराट के आंतरिक सलाहकार बना। भीम वलल नाम से रसोइया बनने के लिए तैयार हो गया। भीम के शारीरिक दार्ढ्य को देखकर विराटराजा उसे एक गौरवप्रद पद देना चाहा। लेकिन भीम ने रसोइया ही बनना पसंद किया।

अर्जुन बृहन्नला नाम से विराट की पुत्री उत्तरा के नाट्याचार्य, नकुल दामग्रंथि नाम से अश्वशिक्षक, सहदेव तंत्रीपाल नाम से गोरक्षक के रूप में नियुक्त हुए।

द्रौपदी 'मालिनी' नाम से विराट की पत्नी सुधेष्णा के यहाँ सैरंध्री के रूप में नियुक्त हुई। सभी अपने अपने नैपुण्य के अनुरूप कामों में लग गए।

महामल्ल का हार

विराट के दरबार में पांडवों के रहते समय एक विशेष घटना घटी। एक नामी मल्ल देश विदेशों में घूमकर, अपनी वीरता का प्रमाण देते हुए विराट की सभा में आया। उसने कहा कि कोई भी उसे हराएगा तो उसे अपने सारे पुरस्कार उसके पादाक्रांत करेगा। उस महामल्ल का रूप देखकर कोई जवाब नहीं दे पाये। विराट को कुछ नहीं सूझ रहा था। चिंता में डूब गए। यह सब देखते हुए कंकुभट्ट ने राजा से कहा कि वलल मल्ल का सामना कर सकता है। राजा ने वलल को सभा में बुलाया। उससे कहा - ''यह मल्ल चुनौती दे रहा है कि कोई उसका सामना करनेवाला है क्या? तुम क्या कहोगे?'' वलल कंकुभट्ट की ओर देखकर उसे प्रणाम करके कहा - ''मैं तैयार हूँ। मैं इसे हराकर आप का सम्मान बढाऊँगा।''

भीम और जगदेकमल्ल गोदाम में खूद पडे। सभा में सभी उत्कंठा से देख रहे थे। भीम ने मल्लयुद्ध में मल्ल को आसानी से हरा दिया। सभा में तालियाँ बजने लगी। जगदेकमल्ल ने दासता स्वीकार की। अपनी सभा का सम्मान बढाने के लिए विराट ने ककुंभट्ट और वलल की भूरि प्रशंसा की।

मेरे पति द्यूत व्यसनी है : मुझे शिष्टता कैसे मालूम होगी

सुधेष्णा का भाई कीचक था। उसके भाई उपकीचक थे। वे सब बहन के यहाँ स्थाई अतिथि थे। उनकी अराचकता का कोई अंत नहीं होता था।

कीचक क्रूर व्यक्ति, सिंहबली था। स्त्रियों पर अत्याचार करने में हिचकता नहीं था। मालिनी को देखकर उसके सौंदर्य के प्रति वह पागल हो गया। उसे किसी भी प्रकार अपने वश में करने के विचार करने लगा। बहन से उसके बारे में बार बार पूछताछ करने लगा तो सुधेष्णा ने उसे मना किया। उसने कहा कि उसकी इच्छा भयानक है। मालिनी के अत्यंत शक्तिशाली पांच गंधर्व पति हैं। जो हमेशा उसकी रक्षा करते रहते हैं। इसलिए उसके प्रति मोह को छोडने का सुझाव दिया।

कीचक ने नहीं सुनी। कैसा भी बहन को मनाया कि एक बार मालिनी को मधुपात्र लेकर अपने मंदिर में भेजे। इसके छल से अनभिज्ञ होने से मालिनी मधुपात्र लेकर कीचक के मंदिर गयी। कीचक उसे बलात्कार करने का प्रयत्न किया, द्रौपदी उससे कैसा भी छुटकारा पाकर भागते हुए विराट की सभा में प्रवेश किया। इस घटना के बारे में राजा से शिकायत की। उसका पीछा करते हुए कीचक वहाँ आया। विराट उसका हाथ पकडकर, समझा बुझाकर वापस भेजा। सभा में बैठा कंकुभट्ट यह सब देख रहा था। कुछ नहीं बोला। मालिनी विराट की सभा में वैसे ही खडी रही। कंकुभट्ट ने कहा - ''कुल स्त्री इस प्रकार सभा में खडे रहना शिष्टता नहीं है।'' द्रौपदी को बहुत गुस्सा आया। उसने आक्रोष के साथ कहा - ''कंकुभट्टारक! मेरे पति द्यूत व्यसनी है। मुझे शिष्टता कैसे मालूम होती है?''

मालिनी का क्रोध...

आधीरात के बाद सैरंध्री अंधेरे में काला चादर ओढकर, वलल के पास गयी। धीमी आवाज में उसे उठाया। वह चौंक उठा और पूछा कारण क्या है? द्रौपदी ने सभा में जो भी हुआ उसे बताया। और अपनी रक्षा करने की प्रार्थना की। वलल ने बहुत सोचा, उसे एक अच्छा उपाय सूझा, उसे बताया, उसे भी अच्छा लगा।

दूसरे दिन सैरंध्री शांत मन से अपना काम करती रही। कीचक का मदन ज्वर वैसे ही था। सैरंध्री से सरस बाते करता ही रहा। सैरंध्री अकेले में उससे कहा कि - ''सब लोग देखते हुए ऐसा मत करो। रात को नर्तनशाला में आऊँगी। वहाँ हम मिलेंगे।'' कीचक फूले नहीं समाया। खुशी खुशी से रात का इंतजार करने लगा। उसे चारों ओर मालिनी ही मालिनी दिखाई देने लगी।

कीचक वध

वलल नारी वेष में आधीरात नर्तनशाला में एक कोने में बैठकर कीचक का इंतजार कर रहा था। सैरंध्री नर्तनशाला के पीछे छुपी थी। कीचक खूब सज - धजकर उत्सुकता से नर्तनशाला में प्रवेश किया। स्त्री वेष में बैठे वलल उसे देखकर आवाज बदलकर ''हा! प्रिया'' कहते हुए कीचक से आलिंगन किया। कीचक को उसका शरीर कठोर लगा, चेहरे का स्पर्श भी कोमल नहीं था। फिर भी कामांध कीचक ने उसे मालिनी ही समझा।

अचानक भीम उठकर ''तुम्हें परस्त्री मुफ्त में चाहिए क्या? पर लोक भेजूँगा। मैं मालिनी का दूसरा पति गंधर्व हूँ। तुम्हारा अंत करने के

लिए इंतजार कर रहा हूँ।'' कहते हुए उसके छाती पर मुट्ठी से प्रहार किया। कीचक द्वन्द्व के लिए आगे बढा। दोनों के बीच भयानक रूप से बाहा - बाही हुई। भीम ने उसे खूब मारा कीचक का अंत हुआ। द्रौपदी ने आनंद से भीम से आलिंगन किया। कीचक की बाधा मुक्त करने के लिए भगवान से प्रार्थना की।

दूसरे दिन कीचक वध की बात चारों ओर आग की तरह फैल गयी। लोगों में चर्चा होने लगी कि - ''रात को मालिनी के गंधर्व पति आकर कीचक को मारा। साध्वी पत्नी को अपमानित करता है तो मारेंगे नहीं क्या?''

एक भी उपकीचक नहीं बचा

कीचक की मृत्यु का कारण मालिनी समझकर, उप कीचक उसे अपने भाई के शव के साथ बांधकर दहन करने के लिए श्मशान ले जाने लगे। यह समाचार सुनकर वलल उपकीचकों पर कूद पडा सबको मार डाला। उनमें एक भी नहीं बचा।

तेरह दिनों में

अपने भाइयों की मृत्यु से सुधेष्णा बहुत दुखी हुई। उनकी मृत्यु का कारण सैरंध्री समझकर उसे नौकरी छोडकर जाने का आदेश दिया। सैरंध्री ने विनम्र प्रार्थना की कि - ''माँ जी! मेरा क्या दोष है? मैं ने पहले ही कहा था न? मेरा व्रत तेरह दिनों में पूरा होने वाला है। तब तक आपकी सेवा करने दीजिए। फिर मैं अपने आप चली जाऊँगी।'' सुधेष्णा दयालु थी। मालिनी की प्रार्थना को स्वीकार किया।

गलत योजना

एक दिन में पांडवों की अज्ञातवास दीक्षा पूरी होनेवाली थी। उसे कैसे भी भंग करने के लिए दुर्योधन योजनाएँ बनाने लगा। उसे सूचना मिली थी कि पांडव विराट के दरबार में हैं। उसने अपनी सेना भेजकर विराट के गायों को उत्तर दक्षिण दिशाओं में घेरकर लाने के लिए भेजा। गायों की रक्षा करने के लिए पांडव जरूर आएंगे और उनको पहचानकर फिर उनको शर्त के अनुसार फिर अरण्यवास और अज्ञातवास भेजने का विचार था।

दूसरों के लिए गडढ़ा खोदनेवाला स्वयं उसमें गिरेगा

दुर्योधन ने अपनी सारी सेना और सेनाध्यक्षों को गोग्रहण के लिए भेजा। वे विराट राजा को बंदी बनाकर गायों के साथ ले जा रहे थे। यह बात जानकर कंकुभट्ट ने कौरवों को हराने के लिए बृहन्नला को आदेश दिया। तब तक अज्ञातवास का समय पूरा हो चुका था। बृहन्नला अनाडी उत्तर कुमार को अपने लिए नाममात्र सारथी बनकर युद्धभूमि के लिए निकल पडे। कुरुवीरों को युद्ध में हराकर गायों को छुडवाकर विजयी होकर वापस लौटे। तब तक अज्ञातवास का समय समाप्त हो जाने के कारण अपने को हरानेवाला अर्जुन ही है। यह बात जानकर भी कौरव कुछ नहीं कर पाये।

कुरु - पांडव युद्ध

कौरव और पांडवों के बीच संधि कार्य हुए। संजय और श्रीकृष्ण ने दोनों पक्षों के बीच संधि करने का प्रयास किया। लेकिन असफल हुए। कौरवों ने पांडवों को आधाराज्य देने से इनकार किया। दुर्योधन ने तो

सूई के नोक मात्र जमीन भी न देने को कहा। युद्ध अनिवार्य हुआ। कौरवों के पक्ष में तो महान योद्धा सेनापति थे। असंख्य अक्षौहिणियों की सेना थी। पांडवों के पक्ष में तो वे पांच और उनके प्रिय संबंधी, सामंत और थोडी सी सेना थी। श्रीकृष्ण सारथी बनकर, सलाहकार के रूप में थे। धर्म उनके पक्ष में था। युद्ध प्रारंभ हुआ। कुछ दिनों तक चलता रहा।

दोनों के पक्ष के प्रतिदिन सेनापति बदलते रहे, सारी सेना भाग ली, भयानक युद्ध हुआ। लाखों सैनिक मारे गए। हाथी, अश्व हजारों संख्या में नष्ट हुए। युद्ध भूमि पूरी मृतदेहों से भरी हुई थी।

भीम भूखे सिंह की तरह भीकर गर्जन करते हुए, विविध शस्त्रों से कौरवों की मृत्यु बनकर युद्ध भूमि में कूद पडा। दुर्योधन की प्रेरणा से दुःश्शासन ने उसका सामना किया। आठ भाई उसके साथ थे। भीम ने बाणों से उनके रथ तोडा, कवच चीर डाला, शस्त्रों को टुकडे टुकडे कर दिया। रक्तसिक्त शरीरों से वे भाग निकले। इस प्रथम विजय से भीम और उत्साह के साथ आगे बढा। कुरुसेना को तितर बितर किया।

प्रतिज्ञा की पूर्ति

भीम ने शल्य पर अपनी गदा से प्रहार किया, वह भाग गया। तुरंत दुर्योधन ने उसका सामना किया। भीम के प्रकोप के सामने न टिक सका। भीष्म के रथ के पीछे छिप गया।

दुःशासन ने रथारूढ होकर भीम का सामना किया। बारह बाणों से भीम को घायल किया। भीम ने प्रलयकाल प्रभंजन सा, रुद्र बनकर उसके सारथी और अश्वों को गदा से मारा। रथ को तोड डाला। दोनों द्वंद्व युद्ध करने लगे। भीम की शक्ति बढती गयी। भीम ने आवेश से दुःशासन

की छाती चीरकर, सब के देखते हुए, उसका खून पी लिया। और कहा कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गयी। मैं अपने इन रक्त सिक्त हाथों से द्रौपदी के खुले बालों को बांधूँगा। सीधे द्रौपदी के पास जाकर उसके बाल बांध दिया। द्रौपदी का मन प्रसन्न हुआ।

भीम ही समान स्तर का है

अपने सभी लोग युद्ध में मारे जाने के कारण दुर्योधन अकेला पड गया। गुरु, बंधु, मित्र सब को खोने पर उसे युद्ध से डर लगने लगा।

इसलिए वह द्वैपायन सरोवर में छिप गया। किसी ने यह राज पांडवों को बताया। पांडवों ने सोचा कि शत्रुशेष और ऋण शेष नहीं बचना चाहिए। इसलिए वे दुर्योधन का अंत करने केलिए द्वैपायन सरोवर पहुँचे। दुर्योधन को बाहर आने के लिए कहा। पहले वह बाहर आने से इनकार किया। बहुत उकसाने के बाद सरोवर से बाहर निकला। उसने सोचा था कि पांचों पांडव मिलकर उसे मारेंगे। पांडव कभी भी ऐसा अधर्म नहीं करते। युद्ध के लिए अपने में से किसी एक को चुनने के लिए कहा। दुर्योधन ने भीम को अपना समकक्ष मानकर उसे चुना।

दूसरी प्रतिज्ञा पूरी हुई

दुर्योधन और भीम के बीच अंतिम द्वन्द्व युद्ध हुआ। वह युद्ध देखने लायक था। दोनों गदाधर होकर युद्ध कर रहे थे। घंटे, दिन गुजर गए लेकिन युद्ध समाप्त नहीं हो रहा था। श्री कृष्ण अपना अंतिम सुझाव देना चाहता था। भीम को अपना जाँघ दिखाते हुए इशारा किया। दुर्योधन की एक कमजोरी थी कि उसे एक शाप जैसा था। उसके पूरे शरीर में जाँघ बहुत दुर्बल थे। उस पर प्रहार करे तो वह टूट जाएगा कुछ नहीं कर पाएगा। भीम ने वही किया। दुर्योधन के जाँघों पर गदा से प्रहार किया। दुर्योधन नीचे गिर पडा। भीम ने उसे पैरों तले शैंद लिया। उसका रत्न खचित मुकुट दूर जा गिरा। दुर्योधन का अंत अत्यंत दयनीय स्थिति में हुआ। धर्मराज ने आँसू बहायी। भीम अपनी प्रतिज्ञा पूरी होने पर अत्यंत प्रसन्न था।

धर्मपट्टाभिषेक

धर्मराज ने अपने पितामह भीष्म से सभी धर्मसूत्रों को सीख लिया था। धर्मपालन करने के लिए उपयुक्त शक्ति संपन्न बन गया।

महाप्रस्थान

एक शुभ मुहूर्त में मंगलवाद्यों के बीच, वेदविद के मंत्रोच्चारण करते हुए पंडितों के आशीर्वाद और प्रजा के आनंदोल्लास के बीच श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में धर्मराज द्रौपदी सहित सिंहासन पर आरूढ होकर पट्टाभिषिक्त हुए। भीम युवराज के रूप में, विदुर मंत्री संजय आर्थिक विषयों के पर्यवेक्षक, अर्जुन शत्रुशासक, नकुल सेनाध्यक्ष, सहदेव सर्वरक्षक धौम्य पुरोहित के रूप में नियुक्त हुए। धर्मराज ने कुछ समय प्रजारंजक रूप से राज्यपालन किया। उसके समय में धर्म कृतयुग की भांति चारों पादों पर चला।

इसके बाद अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को सिंहासन पर बिठाकर पांडव प्रजा की अनुमति से द्रौपदी के साथ महाप्रस्थान पर निकले।

भारत की कथा कई हजारों पूर्व की होने पर भी, भारतीयों के हृदयांतराल पर आज भी उसका भव्य प्रभाव है। भारतीय वीरों के लिए भीम असमान, अद्वितीय है। भीम के बिना भारत की कल्पना नहीं कर सकते हैं।

* * *